IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षक प्रशिक्षण (कार्यक्रम) प्रयोगात्मक के सन्दर्भ में आने वाली प्रमुख समस्याओं का अध्ययन

डॉ0 कौशलेन्द्र कुमार
एसोसियेट प्रोफेसर
ए0 के0 कालेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

प्रस्तावना

किसी भी शिक्षण संस्थान की इमारत, उसके उपकरण तथा वातावरण कितने ही अच्छे हों, प्रधानाचार्य और प्रबन्ध समिति कितनी ही अच्छी क्यों न हों यदि उस विद्यालय में कुशल शिक्षक नहीं हैं, उनमें अपने कार्य के प्रति निष्ठा नहीं है तथा व्यावसायिक कुशलता तथा पेशे के प्रति आस्था का अभाव है तो उस विद्यालय में भौतिक सुविधाएं चाहे जैसी भी हों शिक्षा का वातावरण अनुकूल नहीं बन सकता उस विद्यालय से निकले हुए छात्र समाज के लिए भार होंगे? इसलिए कहा जाता है कि – शिक्षक का व्यक्तित्व वह धुरी है जिस पर शिक्षा व्यवस्था घूमती है।

विद्यालय में संचालन, उत्तम शिक्षण, अनुशासन तथा चरित्र निर्माण प्रत्येक दृष्टिकोंण से विद्यालय में कुशल, अनुभवी तथा कर्तव्यपरायण शिक्षकों की आवश्यकता है। जिस विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति रूचि होगी, वे अपने विषय के ज्ञाता होंगे, उस विद्यालय में शिक्षा में लिए एक अनूठे वातावरण का निर्माण होगा और ऐसे ही विद्यालय में कुशल नागरिक उत्पन्न होंगे जो समाज का कल्याण कर सकेंगे ।

आज के बदलते परिवेश एवं तकनीकी के बढ़ते प्रयोग में शिक्षक का स्थान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि कुशल शिक्षक ही बालकों की जन्मजात प्रतिभा पहचानता है, उसके विकास हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान कर सकता है। बच्चों की शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक अवस्था का परिचय प्राप्त करके ही उनको प्रेरित किया जा सकता है तथा उनके व्यक्तित्व को सर्वाधिक विकास की ओर उन्मुख किया जा सकता है। शिक्षक ही सही मायने में विद्यार्थियों को देश का भावी कर्णधार बना सकते है। शिक्षक अपने इस महान उत्तरदायित्व को समझकर ही शैक्षिक प्रक्रिया को सरल, सुगम व समयानुकूल बना सकता है। अस्तू सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया की धुरी शिक्षक के इर्द गिर्द ही घूमती है जो उसकी महत्वपूर्ण भूमिका को शिक्षा के सभी स्तरों पर इंगित करती है। यही कारण है कि शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा रही है, जो पुराने शिक्षक हैं उनको भी सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था है क्योंकि दिन प्रतिदिन शिक्षण की जो नवीन मनोवैज्ञानिक विधियॉ प्रतिपादित की जा रही हैं उनसे सेवा कालीन शिक्षक भी लाभ उठा सकें। इस व्यवस्था का ध्येय शिक्षकों को प्रत्येक स्तर के अनुकूल कुशल शिक्षक बनाना है। जिससे वह अपने उत्तरदायित्व को सफलता एवं दक्षता पूर्वक निभा सकें।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि मात्र शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) की व्यवस्था कर देने से ही एक छात्राध्यापक कुशल शिक्षक नहीं बन पा रहा है, उसके सम्मुख शिक्षक–प्रशिक्षण (प्रयोगात्मक) से सम्बन्धित विभिन्न समस्यायें आ उपस्थिति होती हैं। जो उसे शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) से पूर्णतया लाभान्वित नहीं होने देती हैं। जब तक उन समस्याओं का ठीक प्रकार से निराकरण नहीं किया जायेगा तब तक शिक्षक स्वयं को उपयोगी व सफल शिक्षक कहलाने में सफल नहीं हो सकता। इसलिए प्रयोगात्मक पक्ष के अन्तर्गत शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) के सम्मुख आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया जाना अति आवश्यक है।

शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रमुख अंग शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) के अन्तर्गत उत्पन्न समस्यायें किसी भी शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि ये एक शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि ये एक शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) को कुशल व सफल शिक्षक बनाने में अवरोधक का कार्य करती है। अतः यह आवश्यक है कि उन समस्याओं का अध्ययन किया जाये जिससे शिक्षण– प्रशिक्षण कार्यक्रम को गुणात्मक स्वरूप प्रदान करने की दिशा में पहल की जा सके। इसी महत्वपूर्ण तथ्य को अनुभव करते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया है।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

किसी भी समस्या का स्थायी समाधान पाने हेतु उसके मूल तक पहुॅचना आवश्यक है चूॅकि शिक्षक शिक्षा की समस्याओं का समाधान केवल इनके सैद्धान्तिक पक्ष में सुधार करके नहीं किया जा सकता वरन् उसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षा के महत्वपूर्ण प्रयोगात्मक पक्ष के अन्तर्गत आने वाली समस्याओं पर गहनता से अध्ययन किया जाए तभी इस समस्या को हल किया जा सकता है।

चूॅकि शोधार्थी शिक्षा विभाग में एसोसियेट प्रोफेसर है तथा उसे भी अपने अध्यापन काल में शिक्षण अभ्यास का सामना करना पड़ता है। अतः शोधार्थी की यह जिज्ञासा है कि प्रस्तुत शोध द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रयोगात्मक पक्ष के अन्तर्गत छात्राध्यापकों के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न समस्याओं का अध्ययन किया जाये और इन समस्याओं की ओर शिक्षक शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षक–प्रशिक्षकों, व्यवस्थापकों, नीतिनिर्धारकों का ध्यान आकर्षित किया जाये जिससे वे इन समस्याओं को दूर करने की दिशा में प्रयत्न करें जिससे प्रशिक्षण काल में प्रयोगात्मक पक्ष को अधिक सरल, सफल व उपयोगी बनाया जा सके।

अतः यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को गुणात्मक स्वरूप प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण अध्ययन सिद्ध होगा। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों, शिक्षक.प्रशिक्षकों नीति–निर्धारकों व शैक्षिक व्यवस्थापकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे।

यदि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) के अन्तर्गत छात्राध्यापकों के सम्मुख आने वाली समस्याओं को संकलित कर उनके सम्मुख आने वाली समस्याओं को संकलित कर उनके समाधान हेतु कुछ उपराचात्मक प्रयास किये जायें तो निश्चय ही शोध अध्ययन के परिणामों की सार्थकता तथा उपयोगिता सिद्ध होगी।

शोध अध्ययन के उद्देष्य

प्रस्तुत शोध विषय को निम्न उद्देश्य की पूर्ति हेतु चुना गया है– शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) अध्ययन के सन्दर्भ में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।

शोध अवधारणायें

प्रस्तुत शोध कार्य के सम्बन्ध में कोई पूर्व कथन करना सम्भव नही था। अतः कुछ प्रचलित अवधारणाएं ही शोध कार्य की आधार बिन्दु रही हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. सम्बन्धित प्रशिक्षण महाविद्यालय की विषय आबंटन नीति के अनुसार छात्राध्यापकों को अपनी रूचि के शिक्षण विषय मिलने में कठिनाई उत्पन्न होती है।
2. शिक्षण अभ्यास काल में छात्राध्यापकों को भाषा सम्बन्धी कठिनाई उत्पन्न होती है।
3. छात्राध्यापकों को प्रशिक्षण विद्यालय से सम्बन्धित कर्मचारियों, विषयाध्यापकों आदि के असहयोगात्मक व्यवहार सम्बन्धी व्यावहारिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
4. छात्राध्यापकों के समक्ष कक्षा व्यवस्थापन में अनुशासन, सम्बन्धी कठिनाई सामने आती है।
5. छात्राध्यापकों द्वारा पढाये गये प्रत्येक पाठ का पर्यवेक्षण, पर्यवेक्षकों द्वारा न किये जाने पर छात्राध्यापकों के द्वारा पर्यवेक्षण सम्बन्धी कठिनाई उत्पन्न होती है।

शोध की सीमाएं

1. प्रस्तुत शोध में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए केवल बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों को ही चुना गया है।
2. सभी अध्यापक फिरोजाबाद जिले के ए0 के0 कालेज शिकोहाबाद एवं जे0 एस0 कालेज शिकोहाबाद से लिए लिये गये हैं।
3. न्यादर्श में 100 छात्राध्यापकोंको सम्मिलित कर उनके ही विचार संकलित किये गये हैं।
4. न्यादर्श में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थी दोनों सम्मिलित हैं।
5. प्रस्तुत शोध में उन्हीं समस्याओं का अध्ययन किया गया है जो शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगात्मक) से सम्बन्धित है।
6. सूचनाओं के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में फिरोजाबाद शहर के अन्तर्गत आने वाले सभी बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों को जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्ष

संसाधनों एवं समय के अभाव के कारण फिरोजाबाद जिले के दो प्रशिक्षण महाविद्यालय ए0 के0 कालेज शिकोहाबाद एवं जे0 एस0 कालेज शिकोहाबाद के 50–50 बी0 एड0 के छात्राध्यापकों का चयन न्यादर्श के अन्तर्गत किया गया है।

शोध विधि

शोध समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यह विधि वर्तमान के तथ्यों को एकत्र ही नहीं करती वरन् उनकी व्याख्या, विभाजन, निष्कर्ष प्राप्ति तथा उसका सामान्यीकरण भी करती है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में शोधार्थी द्वारा स्व निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियॉ

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं विवेचन हेतु सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विष्लेषण एवं व्याख्या

1. 72.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों को उनकी रूचि के अनुसार प्रयोगात्मक पक्ष हेतु शिक्षण विषय आबंटित किये गये जबकि 27.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ ऐसा नहीं हो पाया ।
2. 20 प्रतिशत छात्राध्यापकों के शिक्षण विषयों के चयन के आधार महाविद्यालय की विषय आबंटन नीति पायी गयी जबकि 7.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के विषय आबंटन का आधार विषयाध्यापक की उपलब्धता रही।
3. 62.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों को प्रयोगात्मक पक्ष माध्यमिक विद्यालय आबंटित किये जबकि 5 प्रतिशत छात्राध्यापकों को जूनियर हाई स्कूल में प्रयोगात्मक पक्ष का अभ्यास कराया गया ।
4. 55 प्रतिशत छात्राध्यापकों को उनके बौद्धिक स्तर शैक्षिक स्तर शैक्षिक योग्यता एवं रूचि के आधार पर कक्षा का आवंटन किया गया जबकि 45 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं किया गया।
5. 45 प्रतिशत छात्राध्यापकों को कक्षा आवंटन विभाग द्वारा निर्धारित की गयी कक्षा आवंटन नीति के आधार पर किया गया।
6. 37 प्रतिशत छात्राध्यापकों की कक्षा चयन में प्राथमिकता कक्षा 9 पायी गयी जबकि 12.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों की प्राथमिकता कक्षा 6 पायी गयी।
7. 60 प्रतिशत छात्राध्यापकों को उनकी प्राथमिकता वाली कक्षा शिक्षण करने हेतु मिली जबकि 40 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं किया गया।
8. 35 प्रतिशत छात्राध्यापकों को पढ़ाये जाने वाले विषय के पाठ्यक्रम चयन का आधार विद्यालय के विषयाध्यापक द्वारा निर्देशित पाठ्यक्रम रहा जबकि 30 प्रतिशत छात्राध्यापकों के चयन का आधार छात्रों की रूचि के अनुसार चयनित पाठ्यक्रम रहा।
9. 75 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने पदवार क्रमिक रूप से पाठ योजना बनाना सीखा जबकि 5 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने किसी सहायक पुस्तक के माध्यम से पाठ योजना बनाना सीखा।
10. 55 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने प्रतिदिन पाठ योजना को अनुक्रमणिका में क्रमवार तथा तिथिवार अंकित कर विषयाध्यापक से हस्ताक्षर नहीं कराये जबकि 45 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा पाया गया ।
11. 90 प्रतिशत छात्राध्यापकों को निर्धारित 20 पाठ योजनाओं का अभ्यास शिक्षण विद्यालय में नहीं कराया गया जबकि 10 प्रतिशत छात्राध्यापकों को 20 पाठ योजनाओं का अभ्यास कराया गया।
12. 65 प्रतिशत छात्राध्यापकों को 10 से 15 पाठ योजनाओं का अभ्यास प्रशिक्षण विद्यालय में कराया गया जबकि 35 प्रतिशत छात्राध्यापकों को 5 से 10 पाठ योजनाओं का अभ्यास कराया गया।
13. 92.5 छात्राध्यापकों को 20 पाठ योजनाएं बनाने को कहा गया लेकिन पूर्ण 20 पाठ योजनाओं का अभ्यास प्रशिक्षण विद्यालय में नहीं कराया गया। जबकि 7.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के अनुसार उतनी ही पाठ योजनाएं बनाने को कहा गया जितनी पाठ योजनाओं की अनुमति प्रशिक्षण विद्यालय द्वारा प्रदान की गयी।
14. 60 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सभी पाठ योजनाओं की जॉच विषयाध्यापक द्वारा नहीं की गयी जबकि 40 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा पाया गया।
15. 62.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों को पाठ योजना बनाने में अपने अध्यापक का नियमित निर्देशन प्राप्त हुआ जबकि 37 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं पाया गया।

16. 82.5 प्रतिशत छात्राध्यापक पाठ योजना बनाने के पश्चात उसे कक्षा में पढ़ाने से पूर्व विषयाध्यापक से पाठ योजना की जॉच कराते थे जबकि 17.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं पाया गया।
17. 70 प्रतिशत छात्राध्यापकों की पाठ योजनाओं के प्रति अध्यापक की प्रतिक्रिया पाठ योजना को पढ़कर, उसकी कमियों को स्पष्ट करके ही पाठ पढ़ाने की स्वीकृति प्रदान करना रही जबकि 12. 5 प्रतिशत छात्राध्यापकों की पाठ योजनाओं के प्रति अध्यापक की प्रतिक्रिया पाठ योजना को बिना पढ़े ही हस्ताक्षर कर देना रही।
18. 97.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों की पाठ योजनाओं की जॉच सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा पायी गयी।
19. 82.5 छात्राध्यापकों के अनुसार प्रयोगात्मक पक्ष के लिए आबंटित विद्यालय में शिक्षण अधिगम का माध्यम हिन्दी भाषा पाया गया जबकि 17.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं पाया गया।
20. 87.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों की पूर्व शिक्षा का माध्यम हिन्दी पाया गया जबकि 12.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों का माध्यम अंग्रेजी पाया गया।
21. 95.0 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने प्रयोगात्मक पक्ष के अन्तर्गत हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जबकि 5 प्रतिशत ने अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया।
22. 95 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने शिक्षण करते समय उसी भाषा का प्रयोग किया जो भाषा उस विद्यालय में शिक्षा का माध्यम थी जबकि 5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं पाया गया ।
23. 62.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने महाविद्यालय द्वारा निर्धारित विशेष वेश–भूषा का प्रयोग किया जबकि 37.5 छात्राध्यापकों ने नियमित कक्षा वाली वेश–भूषा का प्रयोग किया।
24. 80 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने प्रयोगात्मक पक्ष के अन्तर्गत सहायक सामग्री का प्रयोग किया जबकि 20 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं किया गया।
25. 72.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रयोगात्मक के अन्तर्गत दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग नहीं किया जबकि 22.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा पाया गया।
26. 87.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के प्रति विद्यालय के कर्मचारियों का व्यवहार सहयोगात्मक रहा जबकि 5.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के प्रति वैमनस्यपूर्ण रहा।
27. 72.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों की कक्षा के छात्र अनुशासित पाये गये जबकि 27.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं पाया गया।
28. 25 प्रतिशत छात्राध्यापकों के अनुसार छात्रों की अनुशासनहीनता का कारण छात्रों द्वारा अध्यापकों को स्थायी अध्यापक न समझना पाया गया जबकि 2.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के अनुसार छात्राध्यापक द्वारा अरूचिपूर्ण शिक्षण विधियों का प्रयोग करना रहा।
29. 77.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के द्वारा पढ़ाये गये पाठ का पर्यवेक्षण नियमित रूप से नहीं किया गया जबकि 22.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा पाया गया।
30. 72.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के प्रयोगात्मक पक्ष को प्रशिक्षण महाविद्यालय के किसी भी विषयाध्यापक द्वारा पर्यवेक्षित किया गया जबकि 12.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के शिक्षण अभ्यास को प्रशिक्षण महाविद्यालय के सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा किया गया।
31. 22.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों को 10 मिनट का समय पाठ के पर्यवेक्षण हेतु दिया गया जबकि 50 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं पाया गया।

32. 72.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों द्वारा पाठ को पर्यवेक्षित करने हेतु दिये जाने वाले समय से सन्तुष्ट नहीं पाये गये जबकि 27.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों के सन्दर्भ में ऐसा पाया गया।
33. 35 प्रतिशत छात्राध्यापकों द्वारा पाठ का मूल्यांकन पर्यवेक्षक द्वारा दी गयी टिप्पणी के आधार पर किया गया जबकि 6 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने अपने सहपाठियों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों के आधार पर किया गया।
34. 60 प्रतिशत छात्राध्यापकों द्वारा पाठ के मूल्यांकन हेतु प्रश्नोत्तर प्रविधि का प्रयोग किया गया जबकि 10 प्रतिशत छात्राध्यापकों द्वारा सत्य व असत्य कथन का प्रयोग के मूल्यांकन हेतु किया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से प्राप्त उपलब्धियों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिक्षण अभ्यास के अन्तर्गत छात्राध्यापकों के सम्मुख प्रमुखतः रूचि के शिक्षण विषय न मिलना, छात्राध्यापकों की योग्यतानुसार कक्षा का आवंटन न होना, प्राथमिकता वाली कक्षा न मिलना, पाठ योजना निर्माण में अध्यापक के निर्देशन का अभाव, कक्षा शिक्षण में भाषा की समस्या, वेशभूषा की समस्या, छात्राध्यापकों को दृश्य–श्रृव्य सामग्री के प्रयोग का तरीका न आना, सहायक सामग्री की प्राप्ति की समस्या, विद्यालय में सम्बन्धित विषयाध्यापक से सम्पर्क की समस्या, छात्रों के असहयोगात्मक एवं समस्यात्मक व्यवहार की समस्या, छात्र अनुशासनहीनता की समस्या, छात्रों द्वारा छात्राध्यापकों को स्थायी अध्यापक न समझना, पाठ योजना शिक्षण, हेतु निर्धारित 35 मिनट का समय न प्रदान करना, पाठ का नियमित पर्यवेक्षण न होना, पाठ के लिए उचित समय न दिया जाना आदि समस्यायें आती हैं।

शोध अध्ययन की उपादेयता

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम को गुणवत्तापरक व उद्देश्यपरक बनाने में पूर्णतः उपयोगी सिद्ध होंगे क्योंकि प्रयोगात्मक पक्ष शिक्षण–प्रशिक्षण, कार्यक्रम का एक प्रमुख अंग है, जो इस कार्यक्रम को पूर्णता प्रदान करता है। अतः शोध से प्राप्त निष्कर्षों का प्रयोग प्रयोगात्मक पक्ष से सम्बन्धित छात्राध्यापकों की प्रमुख समस्याओं को दूर करने की दिशा में किया जाये तो निश्चित ही शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेगा।

अन्ततः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षक–प्रशिक्षकों, नीति–निर्धारकों, शैक्षिक व्यवस्थापकों व मुख्य रूप से भावी शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिये उपयोगी व लाभकारी सिद्ध होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वशिष्ट के0के0 एवं शर्मा डी0 एल0 भारतीय शिक्षा की नई दिशा, जय भारत प्रकाशन मेरठ।
जौहरी एवं पाठक भारतीय शिक्षा की समस्यायें विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
गैरेट एच0 ई0 शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय लन्दन लिंगमेन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी
शर्मा आर0 ए0 शैक्षिक अनुसंधान लॉयल बुक डिपो, मेरठ।
बुच एम0 बी0 शैक्षिक अनुसंधान पंचम संस्करण भाग –2 एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली।
राय पी0 एन0 अनुसन्धान परिचय लक्ष्मी नारायण प्रकाशन आगरा।

IJCRT